कौशलयुक्त शिक्षण
(Skillful teaching)

अरविन्द विश्वकर्मा, (सहायक अध्यापक)
पीएम श्री कम्पोजिट विद्यालय गिरहिया बंजारीपट्टी, ब्लाक–निचलौल,
जनपद – महराजगंज, उत्तर प्रदेश

उद्देश्य–

कौशलयुक्त शिक्षण विद्यार्थियों को जीवन की चुनौतियों के लिए तैयार करता है।यह शिक्षा को अधिक उपयोगी, व्यावहारिक और प्रभावशाली बनाकर विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की नींव रखता है। वर्तमान समय में परंपरागत शिक्षा के साथ–साथ कौशल युक्त शिक्षा जैसे:– गायन–वादन काष्ठ कला और बागवानी का ज्ञान अति आवश्यक है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए विद्यालय में कौशलयुक्त शिक्षा प्रदान करना आरंभ किया गया, जिससे बच्चे आत्मनिर्भर,जिम्मेदार और सक्षम बन सकें।

क्रियान्वयन–

हारमोनियम (संगीत) के माध्यम से– विद्यालय की मॉर्निंग असेम्बली बच्चों के व्यक्तित्व विकास अनुशासन और नैतिक मूल्यों के निर्माण का महत्वपूर्ण माध्यम होता है। सामान्यतः प्रार्थना में यदि मौलिकता न हो तो वह मात्र औपचारिक गतिविधियां बनकर रह जाते हैं जिसमें बच्चों की सक्रिय सहभागिता कम हो जाती है। इसी के दृष्टिगत विद्यालय में जुलाई 2018 में "संगीत आधारित नवाचार" आरंभ किया गया। इसके लिए प्रार्थना सभा को अधिक रोचक,प्रेरणादायक एवं सहभागिता पूर्ण बनाने के लिए हारमोनियम ढोलक और झाल बजाकर प्रार्थना और राष्ट्रगान सुर–लय में गाना सिखाया गया। इसके लिए स्वयं के खरीदे हुए हारमोनियम और विद्यालय के हारमोनियम की सहायता से बच्चों को सिखाना आरंभ किया। प्रत्येक शनिवार मध्यान्ह भोजन के बाद तथा अन्य दिनों के अंतिम कलांश में इच्छुक विद्यार्थियों का चयन कर पहले सरगम सिखाया।प्रारंभ में विद्यार्थियों की अंगुलियां नहीं चल पा रही थी।यदि हारमोनियम बजाने वाला विद्यार्थी कोई त्रुटि करता तो उसे नोट कर लिया जाता और पूर्ण संशोधित रूप में अभ्यास करा दिया जाता। निरंतर अभ्यास करने से वादन में सुधार हो गया। धीरे–धीरे प्रार्थना और राष्ट्रगान विद्यार्थी स्वयं गाने और बजाने लगे । सुबह के प्रार्थना के समय साउंड सिस्टम सेटअप करके प्रार्थना मंडली के विद्यार्थी मंच पर उपस्थित होते हैं और हारमोनियम वादक विद्यार्थी उस दिन की प्रार्थना का धुन बजाता है और मंडली द्वारा प्रार्थना की जाती है।इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय त्योहार और वार्षिक उत्सव में सरस्वती वंदना, स्वागत गीत और देशभक्ति गीत का अभ्यास कराया जाता है इस बात का ध्यान रखा जाता है कि गायन और वादन एक ही सुर और लय में हो। इस गतिविधि से बच्चों में विद्यालय नियमित रूप से आने की प्रवृत्ति बढ़ी, वे सुबह की प्रार्थना सभा में आने के लिए उत्साहित रहते हैं, साथ ही एक साथ संगीत द्वारा प्रार्थना करने से उनमें गायन और वादन की प्रतिभा में भी वृद्धि हो रही है।

काष्ठ कला के माध्यम से – बच्चों में रचनात्मक हस्त कौशल, आत्मनिर्भरता एवं व्यवहारिक ज्ञान विकसित करने के लिए काष्ठ कला को नवाचार के रूप में अपनाया गया।इसके लिए कक्षा 8 के विद्यार्थियों का चयन किया गया है। सर्वप्रथम विद्यार्थियों को काष्ठ कला का महत्व तथा लकड़ी से बनी वस्तुएं दिखाकर प्रेरित किया जाता है। प्रत्येक शनिवार को मध्यान्ह भोजन के बाद औजारों के सुरक्षित प्रयोग एवं सावधानियों की जानकारी दी जाती है। जैसे – आरी में धार लगाना। इसी प्रकार लकड़ी में कील ठोंक कर बताया जाता है कि किस प्रकार हथौड़ी से आघात करने पर कील मुड़ती नहीं है।यदि कील मुड़ जाए तो उसे किस प्रकार औजार का प्रयोग करके बाहर निकाल सकते हैं इस बात पर जोर दिया जाता है कि विद्यार्थी सही तरीके से औजार चलाना सीख जाएं। इसके बाद बच्चे पेन स्टैंड,फोटो फ्रेम बनाने के साथ–साथ विद्यालय के टूटे हुए डेस्क एवं बेंच की मरम्मत भी करने लगे। इस कार्य में विद्यार्थी गुनिया,पेंचकस का प्रयोग तथा फेविकोल की सहायता से दो अलग–अलग लकड़ियों को जोड़ना भी सीखें। इस प्रकार छोटे–छोटे प्रयासों से बच्चों में विभिन्न कौशलों का विकास किया जाता है जो उन्हें पढ़ाई के साथ–साथ व्यावसायिक दक्षता को विकसित करने में भी सहायक हैं।

बागवानी के माध्यम से – बागवानी के माध्यम से कक्षा 8 के विद्यार्थियों को कृषि एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक बनाने के लिए बागवानी विधि अपनाई गई। विद्यालय के पीछे वाले प्रांगण में स्थान को साफ और समतल करके बीज बोने योग्य मिट्टी तैयार किया गया।फिर पांच क्यारी बनाकर उसमें पालक,मूली,धनिया,मटर एवं बैगन लगाया गया। बीजों के अंकुरण से लेकर प्रौढ़ पौधा बनने तक खाद पानी एवं सुरक्षा का ध्यान रखा गया। विद्यालय के वातावरण को हरा–भरा बनाने के लिए विद्यार्थियों द्वारा गुलाब, गेंदा, हरसिंगार तथा विभिन्न प्रकार के शो प्लांट लगाए गए। जब पौधे बड़े होने लगे तो उनके अतिरिक्त और अनावश्यक डालियों को काटकर सुंदर आकर देना विद्यार्थियों को सिखाया गया।अब बच्चे यह काम स्वयं करने लगे हैं।

वर्टिकल बैग तैयार कराया गया जिसमें एक प्लास्टिक बैग में 4 इंच व्यास और 3 फीट लंबे पाइप में गिट्टी भरकर और उसके साइड में उपजाऊ मिट्टी डालकर दबा दिया गया और फिर पाइप निकाल लिया गया। बैग में लगाए जाने वाले पौधों की संख्या के अनुसार छिद्र करके टमाटर मिर्च तथा

धनिया का पौधा विद्यार्थियों द्वारा लगवाया गया।अब इसकी सिंचाई एवं देखभाल विद्यार्थी स्वयं करने लगे हैं। इस प्रकार कृषि और बागवानी के कौशलों को सीखाकर विद्यार्थियों की विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ाने का प्रयास किया जाता है।

प्रभाव –

विद्यालय में कौशल युक्त शिक्षण क्रियान्वित करने से जहां बच्चे वाद्य यंत्र बजाकर प्रार्थना सभा को मौलिक (स्वयं गाना और बजाना) एवं आनंदमय वातावरण बनाते है। वहीं बेसिक बाल क्रीड़ा प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर 2019 से 2024 तक (कोरोना काल को छोड़कर) निरंतर चार वर्षों तक यह विद्यालय जिला चैंपियन रहा। 2024 में प्रदेश स्तर की प्रतियोगिता में भाग लेकर बच्चों ने राष्ट्रीय एकांकी में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। हारमोनियम वादक कक्षा का विद्यार्थी आलोक गुप्ता ने व्यक्तिगत बताया कि जब उसने अपने गांव के कीर्तन कार्यक्रम में हारमोनियम बजाया तो दर्शकों ने उसकी कला की बहुत सराहना की और 500 रुपये पुरस्कार भी दिए। इस प्रकार विद्यालय के अन्य विद्यार्थी भी हारमोनियम वादन की तरफ आकर्षित हुए।परिणाम स्वरूप विद्यार्थी हिंदी की कविताओं का सस्वर वाचन विभिन्न धुनों पर हारमोनियम बजाकर करने लगे।

काष्ठ कला के प्रयोग से बच्चों में जहां एक ओर आत्मविश्वास और आत्मनिर्भर होने का गुण विकसित हुआ वहीं कुछ बच्चों ने इसे अपने रोजगार का साधन बना लिया। कक्षा–8 का विद्यार्थी गणेश चौधरी एक दिन लकड़ी का फोटो फ्रेम स्वयं बना कर लाया और विद्यालय को उपहार स्वरूप भेंट किया। नवाचार के इस परिणाम को देखकर अन्य बच्चे भी प्रेरित हुए। काष्ठ कला कौशल का प्रयोग गणित एवं भाषा शिक्षण में भी हुआ। विद्यार्थियों ने लकड़ी और प्लाई की सहायता से ज्यामितीय आकृतियों और स्वरों की मात्राओं का निर्माण किया। जो दीर्घकाल तक सुरक्षित रहते हैं।विद्यार्थी जहां गणित की ज्यामितीय आकृतिओं के क्षेत्रफल और आयतन की अवधारणा सुगमतापूर्वक समझ जाते हैं वहीं हिंदी भाषा में बच्चे व्यंजन पर मात्रा लगाकर सही उच्चारण कर लेते हैं।

बागवानी कौशल शिक्षण के परिणाम स्वरुप जहां बच्चों में मिट्टी की तैयारी, बीजों का अंकुरण फूलों, फलों एवं पत्तियों की संरचना का ज्ञान हो जाता है वहीं उन्हें वनस्पति विज्ञान के विभिन्न प्रकरणों और औषधीय पौधों को समझने में भी सहायता मिलती है। इस नवाचार के प्रयोग से विद्यार्थियों में पर्यावरण के महत्व के साथ–साथ प्रकृति के प्रति प्रेम विकसित होता है। विद्यार्थी पौधे लगाना, खाद देना, सिंचाई करना एवं पौधों की देखभाल करना व्यावहारिक रूप में सीख जाते हैं। पौधों के नियमित देखभाल से विद्यार्थियों में जिम्मेदारी और अनुशासन विकसित होता है।

अत: कौशल युक्त शिक्षण नई शिक्षा नीति 2020 के **करके सीखने** एवं **अनुभवात्मक शिक्षण** को बढ़ावा देता है।